आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 3/अंक 1/जनवरी 2023
Received:16/12/2022; Published:31/01/2023

कहानी

दर्जिन

शिप्रा चतुर्वेदी

मूल: राइनर मारिया रिल्के (जर्मन)

1988.. के अप्रैल माह की बात है। मुझे अपना घर बदलने के लिए मजबूर होना पड़ा। मेरे मकान मालिक ने इस भवन को बेच दिया था और नए मकान मालिक ने यह निश्चय किया कि वह मंजिल, जिसमें मेरा साधारण सा कमरा स्थित था, उसे पूरा का पूरा ही किराए पर देगा। मैं कमरे पर कमरा ढूंढता रहा पर व्यर्थ। अंत में ढूँढते-ढूँढते थककर लगभग बिना देखे ही मैंने एक मकान की तीसरी मंजिल पर एक छोटा सा कमरा किराए पर ले लिया, जिसकी पतली लम्बी गली का कोई अर्थ ही नहीं था ।

मुझे मेरा कमरा शुरू के दिनों से ही कुछ रहस्यात्मक लगा। दोनों छोटी खिडकियों से, जिनके कई भागों में विभाजित फलक देखकर ही घर की उम्र का अनुमान लगाया जा सकता था, मैं सबसे स्लेटी और लाल छतों के ऊपर देखता था, कालिख से भरी हुई चिमनियों को देखता था, नीले पहाड़ों के ऊपर और चढ़ते हुए जो न सूरज को देख सकता था जो चमकते हुए गोले की तरह धुंधली पहाड़ी किनारों पर टिक जाता था। मेरे फर्नीचर, जिसको मैंने यहाँ मंगवा लिया था, ने उस संकरे कमरे को रहने योग्य बना दिया, जैसा कि मैंने शुरू में उम्मीद की थी। देख भाल की जिम्मेदारी, जो गृह प्रबंधक ने ले ली थी, सो और कोई इच्छा बची नहीं। सीढ़ियों बहुत खड़ी नहीं थीं और उन पर आसानी से चढ़ा जा सकता था, हाँ जब में ख्यालों में डूबा हुआ ऊपर की और चढ़ता था तो मुझे यहाँ तक लगता था कि कोई मुझे छत के कमरे तक पहुँचने (अटारी) काम के लिए फुसला रहा है। कुल मिलाकर मैं संतुष्ट था (गलत) तक के लिए किसी, खास तौर पर अँधेरे आँगन में न बच्चे खेलते थे न लाइयरकास्टेन।

तब से गाँव में कई वर्ष बीत गए। वह समय, जिसकी में बात कर रहा हूँ, मेरे लिए अतीत के झुटपुटे में है, और घटनाओं के चमकीले रंग फीके पड़ गए हैं व धुंधले हो गए हैं। मेरे लिए यह ऐसा है जैसे मैं एक ऐसी घटना की बात कर रहा हूँ, जो मेरे साथ नहीं, बल्कि किसी और के साथ, शायद एक अच्छे दोस्त के साथ घटी हो। इसलिए मुझे यह डर नहीं होना चाहिए कि मेरी आत्मश्लाघा मुझे झूठ के लिए प्रेरित कर रही है। मैं सच, स्पष्ट और यथार्थ लिख रहा हूँ।

मैं तब घर पर बहुत नहीं रहता था। सुबह साढ़े सात बजे मालिक दफ्तर जाता था, दोपहर को किसी सस्ते भोजनालय में खाना खाता था और जहां तक संभव हो, तीसरा पहर अपनी मँगेतर के घर में बिताता था। हाँ, उस समय मेरी सगाई हो चुकी थी। हेडविश, मैं उसे इसी नाम से पुकारना चाहूंगा, जवान, सौम्य, सुशिक्षित थी, और मेरे दोस्तों की नज़रों में जो सबसे महत्वपूर्ण बात थी, वह यह कि वह अमीर थी। वह एक पुराने व्यापारी परिवार से थी, जो मितव्ययता और मेहनत से यहाँ तक पहुंचे थे, कि वे एक घर चला सकें। ऐसी जगह, जहाँ रंगीले नौजवान भी आतेजाते थे-, क्योंकि वहां सहज सुघड़ता में प्रसन्नता छाई रहती थी, जो बोरियत को चाय के कप से दूर कर देती थी। उस घर की था, मैं सबसे छोटी बेटी हेडविश सबकी प्यारी थी, क्योंकि उसके सुरुचिपूर्ण व्यक्तित्व में एक विशेष शिष्ट चंचलता का समन्वय था, जो नीरस से नीरस वार्तालाप को भी दिलचस्प और आकर्षक बना देता थे। वह अपनी दोनों बड़ी बहनों से ज्यादा दिल और दिमागवाली थी, जिंदादिल थी और यह सच है कि मैं उसे प्यार करता था।

मैं खुलकर बात कर सकता हूँ। इस सगाई के टूटने के एक वर्ष बाद उसने एक जवान लड़के, कुलीन अफसर, से शादी की पर अपने पहले बच्चे, भूरे घुंघराले बालों वाली बेटी उसे भेंट देने के बाद वह मर गया। उसके माता पिता के घर में जहाँ रोज़ बड़ी-पार्टियाँ होती थीवह शाम को लगभग छह बजे तक रहता था ., फिर टहलने चला जाता था, थिएटर जाता था, दस बजे रात को घर वापस आता था, अगले दिन इसी दिनचर्या को दोहराने के लिए।

सुबह जब मैं तीसरी मंजिल से नीचे उतरता था तो पहली मंजिल के सामने वाली जगह पर हमेशा घर का प्रबंधन करने वाले से मुलाकात होती थी जो सफेद पत्थर की टाइल साफ़ करता था। वह अभिवादन करता था और बातचीत शुरू कर देता था। हर दिन वही। सबसे पहले मौसम के बारे में, फिर इस बारे में कि मैं अपने घर से कितना संतुष्ट हूँ और ऐसी ही और बातें। चूँकि वह बूढ़ा बातचीत खत्म नहीं करना चाहता था, मैं तुरंत उससे उसके बच्चों के बारे में पूछने लगता था, जिस पर वह सांस भरता था, दांत भींच कर चिल्ला कर कहता थाइसी के साथ बातचीत "यह बड़ी अप्रिय जिम्मेदारी है। वे फ़िक्र करते हैं। श्रीमान।" : खत्म हो जाती थी । एक बार एक मंगलवार को, मैंने सिर्फ कुछ कहने के लिए पूछा, मेरे बगल में कौन रहता है ? प्रश्न का उत्तर बिलकुल उसी तरह दिया गया जैसे पूछा गया थाएक दर्जिन" :, बेचारी, कुरूप," वह असंतुष्ट स्वर में बोला, ज़मीन से ऊपर देखे बिना। बस यही सब कुछ था ।

इस जानकारी को भूले हुए मुझे अरसा हो गया था तभी मैं उससे शायद भवन के बरामदे में धुंधलके में मिला। यह एक रविवार की सुबह की बात थी। मैं बहुत देर तक सोता रहा था और अभी बाहर निकला था, जबकि वह एक छोटी सी किताब हाथ में लिए, शायद चर्च से वापस आ रही थी। एक दीन :हीन आकृति- नुकीले कन्धों, जिन्हें एक रंग उड़ा हुआ हरा, लगभग ज़मीन तक पहुँचता हुआ कोट ढके हुए था, के बीच टिका हुआ सिर, जिसमें सबसे पहले लम्बी, पतली नाक और पिचके हुए गाल पर ध्यान जाता है। पतले हलके खुले हुए होंठ, जिनमें से गंदे दांत दिख रहे हैं, ठोड़ी नुकीली और काफी बाहर को आगे तक निकली हुई।

अर्थपूर्ण इस चेहरे में सिर्फ आँखें लगती थीं। ऐसा नहीं कि वे बहुत सुन्दर थीं पर वे बड़ी थीं और बहुत काली थीं, भले ही उनमें किसी प्रकार की कोई चमक नहीं थी। इतनी काली कि गहरे काले बाल भी स्लेटी लगते थे। मैं सिर्फ यह जानता हूँ कि यह प्रभाव जो इस काया ने मेरे ऊपर छोड़ा था, कतई रुचिकर नहीं था। मुझे लगता है इसने मुझे नहीं देखा। परन्तु इस महत्वहीन मुलाकात के बारे में सोचने का समय ही नहीं था, क्योंकि मैं ठीक दरवाज़े के सामने एक दोस्त, जिसकी पार्टी में मैंने पूरी सुबह बिताई थी, के हाथों में गिर पड़ा। फिर में बिलकुल ही भूल गया कि मेरी कोई पड़ोसिन है, जबकि हम एक दूसरे के बगल में रहते थे। बगल के घर में दिनरात शान्ति छाई रहती थी। ऐसे ही समय आगे बढ़ता रहा -, जब एक रात संयोगवश या इसे मैं क्या कहूं, यह अप्रत्याशित घटना घटी जिसका मुझे कतई अनुमान भी नहीं था।

सब मेरी मँगेतर के घर में अप्रैल के अंतिम दिनों में एक पार्टी हुई, जिसके बारे में दूरदूर तक बहुत - चर्चा हुई। पार्टी बहुत बढ़िया संपन्न हुई और देर रात तक चली। उसी शाम मैंने पाया कि हेडविश बहुत मोहक है। एक छोटे हरे सैलून में मैंने उससे बहुत देर तक बातचीत की और खुश हो कर सुनता रहा, कैसे वह खुशी से भरी हुई, कुछ व्यंगात्मक, पर बालसुलभ, आंतरिक मासूमियत से हमारे भावी घर का खाका खींच रही थी, कैसे वह छोटीछोटी खुशियों और दुखों को चमकीले रंगों से रंग रही थी-, और हमारे सौभाग्य पर खुश हो रही थी, जैसे एक बच्चा एक क्रिसमस ट्री को देख कर खुश होता है। संतोष की एक सुखद भावना झलक रही थी और चैन भरी गर्माहट मेरी छाती में समाई थी। हेडविश भी उस समय मुझे इतनी खुश लगी जितनी इससे पहले कभी नहीं लगी। यही मूड पूरी पार्टी भर छाया रहा। जाम पर जाम। ऐसे ही चलता रहा, सुबह तीन बजे लोग विदा हुए। नीचे एक के बाद एक लगतार गाड़ियाँ जा रही थीं। कुछ पदयात्री अलग - अलग दिशाओं में बिखर गए। चूँकि मुझे आधे घंटे से ज्यादा चलना था, इसलिए मैंने अपने कदम काफी तेज़ किये, और तेज़, क्योंकि अप्रैल की रात ठंडी थी और कोहरा था। मैं अपने ख्यालों में खोया हुआ था और मुझे पता ही नहीं लगा कि इतना समय बीत गया है, मैं तुरंत ही अपने घर के दरवाज़े पर खड़ा था। धीरे से मैंने दरवाज़ा खोला और अन्दर आकर ताला बंद किया। फिर एक तीली जलाई, जो मुझे गलियारे से सीढ़ियों तक रौशनी दे रही थी। बहरहाल यह अंतिम तीली थी जो मेरे पास थी। यह जल्दी ही बुझ गयी। सीढ़ियों को टटोलता हुआ में ऊपर की ओर बढ़ा, अब भी सुन्दर शाम के समय के बार में सोचता हुआ। अब में ऊपर आ गया था। मैने चाबीदरवाजे में लगाई, एक बार घुमाया धीर से खोला...

वह मेरे सामने खड़ी थी। वह। एक गद्दा लगभग जल चुकी मोमबती कमरे को मामूली सी रोमानी दे रही थी, जिस मुझे पसीने और तेल की एक अप्रिय गंध आ रही थी। वह एक खुली हुई कमीज और एक गहरे रंग की स्कर्ट पहने बिस्तर के अंत में खड़ी थी और बिलकुल चकित नहीं, मुझे जड़ आँखों टकटकी लगा कर देख रही थी।

लगता था मैं उसके कमरे में आ गया था। पर मैं इतना उलझन में था, इतना जड़वत था कि माफी का एक शब्द भी बोल न सका, पर मैं गया भी नहीं। मैं जानता हूँ, मुझे घुणा थी, पर मैं रुका रहा। मैने देखा, कैसे वह मेज की और बढ़ी हुए संदिग्ध भोजन के बिखरे हुए अवशेष वाली एक प्लेट को किनारे खिसकाया : कुर्सी से वे कपड़े हटाए जो उसने उतारे थे और मुझसे बैठने को कहा। हलकी सी आवाज़ में.. आइये।

मुझे इस आवाज का लहजा भी अरुचिकर लगा पर मानो एक अज्ञात शक्ति का अनुसरण करते हुए मैने उसकी बात का पालन किया। मुझे पता नहीं किसलिए उस समय वह अपने बिस्तर के किनारे पर बैठी हुई थी। एकदम अँधेरे में। मुझे उसके चेहरे का सिर्फ धुंधला अंडाकार दिख रहा था और जब यहाँ वहां बुझती हुई मोमबत्तियों जल उठती थीं तो उसकी बड़ी आँखें। फिर मैं उठा। में जाना चाहता था। दरवाजे के हैंडल ने प्रतिरोध किया। वह मेरी मदद के लिए आई। चूँकि वह मेरे नजदीक आकर फिसल गई थी तो मुझे उसको बीच में ही पकड़ लेना पड़ा। वह मेरी छाती से चिपट गई और मैंने उसकी जलती हुई साँसों को एकदम नजदीक महसूस किया। मैं बहुत असहज महसूस रहा था। मैं यहाँ से चला जाना चाहता था पर उसकी आँखें मेरी आँखों में एकटक देख रही थीं, मानो इन निगाहों ने मेरे चारों ओर एक अदृश्य बंधन बुन दिया हो। वह मुझे अपनी ओर खींच रही थी, और करीब। उसने गर्म लम्बा चुम्बन मेरे होठों पर दिया तभी मोमबत्ती बुझ गयी।

अगली सुबह जब में सोकर उठा तो मेरा सिर भारी था कमर में दर्द और जीभ पर कड़वापन मेरे बगल में तकिये पर वह सोई हुई थी। वह फीका पिचका हुआ चेहरा पतली गर्दन, संपाद अनावृत वक्ष, मेरे अन्दर डर की लहर दौड़ गयी। दमघोंटू हवा मेरे ऊपर भारी पड़ रही है। मैंने मुड़ कर देखा गदी मेज़, अधिक इस्तेमाल से बेकार हो गई पतली टांगों वाली कुर्सी, खिड़की के आगे लगे हुए फलक पर सूखे हुए फूल, सब कुछ मुझे अपने दयनीय दशा, धीरेधीरे गिरते हालत के परिचायक थे। तभी वह कुछ हिली। उसने एक हाथ - मेरे कंधे पर रखा मानो सपने में हो। मैंने इस हाथ को देखा मोटी गांठों वाली लम्बी उँगलियाँ :, जिनके पोरों की त्वचा भूरी और जिसमें जगहजगह चुभन के- निशान मेरे मन में उस जीव के लिए घृणा भर गयी। में उठा, दरवाजा खोला और दौड़ कर अपने कमरे में चला गया। वहाँ जाकर मैंने राहत की सांस ली। मुझे अब तक पता है कि मैंने दरवाजे की सिटकनी को, जहाँ तक वह जा सकती थी, खिसकाया -

हर दिन ऐसे ही बीतता जैसे कि पिछला एक बार, शायद एक सप्ताह बाद, जब मैं आराम से लेटा था, संयोगवश मैंने कोहनी से दीवार पर ठोका। मैंने सुना कि बिना किसी उद्देश्य से की गई इस खटखट का तुरंत जवाब मिला में शांत रहा। फिर मैं सो गया। अधसोए हुए अचनाक मुझे लगा, मेरा दरवाज़ खोला गया है। अगले पल मैंने एक शरीर को महसूस किया, जो मेरे से सटा हुया था। वह मेरे बगल में थी। उसने मेरी बांहों में रात गुजारी। मैं उसे दूर भेज देना चाहता था, कई बार पर उसने अपनी बड़ी आँखों से मुझे देखा और मेरे शब्द होठों पर लुप्त हो गए। यह बहुत घिनौना था, इस जीव के गर्म अंगों को अपने बगल में महसूस करना, इस कुरूप, कम उम्र में ही बूढ़ी हो गई कन्या, और मेरे अन्दर ताकत नहीं थी .....

कभीकभी सीढ़ियों में मेरी उससे मुलाकात हो जाती थी। वह मेरे बगल- से गुज़र जाती थी जैसे यह पहली बार हो और हम एक दूसरे को नहीं जानते थे। अक्सर वह मेरी तरफ आती थी। धीरे, बिना एक भी शब्द कहे, वह सामने आती थी और अपनी नज़रों से मुझे सम्मोहित करके पकड़ लेती थी। मेरी संकल्पशक्ति ख़त्म हो गई थी। अंत में मैंने इस सब को समाप्त करने का निश्चय किया। मेरे हिसाब से यह मेरी मँगेतर के प्रति अपराध था, इस औरत के साथ हमबिस्तर होना, जो इतने दृढ़ आग्रह से मेरे से सट जाती थी और जिसे इस प्यार का अधिकार कतई नहीं था !

मैं समय से पहले ही घर आ गया और सिटकनी बंद कर दी। जब शाम के नौ बजने को थे, वह आई। चूँकि उसे दरवाज़ा बंद चारों ओर मिला, वह वापस चली गई। उसे लगा मैं घर पर नहीं हूँ। पर मैं सावधान नहीं था। मैंने भारी कुर्सी अचानक कुछ पीछे खिसकाई। यह उसने सुन लिया होगा। अगले ही पल खटखटाने की आवाज़ आई। मैं शांत रहा। एक बार फिर। फिर अधीर, लगातार । अब मुझे उसकी सिसकियों की आवाज़ सुनाई दी, लम्बी, लम्बीउसने आधी रात मेरे दरवाज़े पर बिताई होगी पर मैं दृढ़ बना रहा ..., मैंने महसूस किया कि इस दृढ़ता ने जादू को तोड़ दिया है।

अगले दिन वह मुझे सीढ़ियों पर मिली। वह बहुत धीरेधीरे चल रही थी। जब मैं उसके बहुत - नज़दीक थ◌ा, उसने आँखें खोलीं। मैं डर गयामुझे . इन आँखों में एक रहस्यात्मक चिंगारी और धमकी थी : और मैंने उसे देखा !भाला इंसान था। यह लड़की-अपने ऊपर ही हंसी आ गयी। मैं तो एक मूढ़ भोला, कैसे कठिनाई से वह पत्थर की सीढ़ियों पर कदम रख रही थी और नीचे की ओर जा रही थी .....

तीसरे पहर मेरे बॉस को मेरी ज़रुरत थी सो हेडविश नियमित रूप से जाने वाला कार्यक्रम न हो पाया। शाम को जब में अपने कमरे में आया, मुझे अपनी मँगेतर के पिता का पत्र मिला, जिसने मुझे सबसे बड़े अचम्भे में डाल दिया।

उसमें लिखा था :

बड़े खेद के साथ बता रहा हूँ कि"वर्तमान परिस्थितियों में मैं अपनी बेटी के साथ आपकी सगाई को समाप्त करने के लिए मजबूर हैं। मैं सोचता था कि हेडविश एक ऐसे आदमी पर भरोसा करती है जिस पर किसी अन्य प्रकार की जिम्मेदारियों का बंधन नहीं है। पिता का कर्तव्य है कि वह अपनी संतान को ऐसे अनुभव से बचाए । श्रीमान व,.. मैं इस बात से आश्वस्त हूँ कि आप मेरे व्यवहार को समझ पाएंगे। आप स्वयं समय रहते इन परिस्थितियों के बारे में मुझे बता देते तो बेहतर होता। बहरहाल, लगातार आपकी .....

मेरी मनः स्थिति कैसी थी, यह वर्णन करना मुश्किल है। मैं हेडविश को प्यार करता था। मैं एक ऐसे संपन्न भविष्य का का अभ्यस्त हो गया था जिसका खाका उसने स्वयं तैयार किया था। उसके बिना मेरी नियति क्या होगी यह मैं सोच भी नहीं सकता था। मुझे पता है कि मुझे गहन पीड़ा हो रही थी और इसके पहले कि में यह सोच पाता कि इस असाधारण अस्वीकृति के लिए किसको दोष दूं, मेरी आँखों में आंसू आ गए, क्योंकि असाधारण तो वह हर हाल में थी ही। मैं हेडविश के पिता को जानता था, जो खुद ईमानदारी

और इन्साफ की मिसाल थे, और जानता था कि किसी महत्वपूर्ण घटना ने ही उन्हें ऐसा व्यवहार करने के लिए विवश किया होगा। वे मेरा सम्मान करते थे और मेरे साथ नाइंसाफी करने के हिसाब से बहुत समझदार थे। मैं पूरी रात नहीं सोया । हज़ारों विचार मेरे दिमाग में कौंधते रहे। अंत में मैं थकान से सो गया। जागने पर मैंने ध्यान दिया कि मैं दरवाज़े की चिटकनी लगाना भूल गया था। फिर भी वह मेरे पास नहीं आई थी। मैंने राहत की सांस ली।

मैने जल्दी से कपड़े पहने, कुछ घंटे दफ्तर देर से पहुँचने के लिए क्षमा माँगी और अपनी मँगेतर के घर की ओर बढ़ा। मैंने पाया कि दरवज़ा बंद था और बारबार घंटी बजाने पर भी कोई दिखाई नहीं दिया। - प्रबंधक कहीं अन्द-मैंने सोचा वे कहीं बाहर गए होंगे। गृहर कुछ काम में व्यस्त होगा जहाँ उसे घंटी की आवाज़ नहीं उसे छूने सुनाई दी होगी। मैंने निश्चय किया कि मैं अपने तय समय पर तीसरे पहर आऊँगा।

मैंने ऐसा किया भी। गृहप्रबंधक ने दरवाज़ा खोला-, चकित आँखों से मुझे देखा और बोला, मुझे तो यह पता होना चाहिए था, सभी लोग यात्रा पर गए हुए हैं। मैं डर गया पर ऐसा प्रगट किया जैसे मुझे सब पता हो और पुराने सेवक फ्रांस से बात करने की इच्छा जाहिर की। तब उसने मुझे एक एक बारीकी के साथ बताया कि कल तीसरे पहर एक विशेष घटना घटने के बाद सब, सब यात्रा पर चले गए हैं।

“मैं खड़ा था”। ऐसा उसने कहा, "यहाँ सामने की जगह मेज पर रखे चम्मच आदि को साफ़ कर रहा था कि एक औरत नीचे आई और उस दुखी औरत ने अन्दर आकर मुझसे अनुरोध किया कि उसे सुश्री हेडविश के पास ले जाऊं। जाहिर है मैन बात नहीं मानी, पहले इंसान को पहचानना तो चाहिएमैंने उत्सा "...ह से सिर हिलाया। मेरे दिमाग में एक विचार आयाहां तो संक्षेप में" ...” वह बातूनी आगे बोला, "वह मेरे इनकार पर अब तक शोर मचा रही थी और दुहाई दे रही थी कि तभी दयालु सज्जन अन्दर आये। अब उसने उनसे अनुरोध किया और आग्रहपूर्वक प्रार्थना कर कसम खाई कि वह कुछ ज़रूरी खबर लाई है। वे उसे अपने कैबिनेट में ले गए। वह वहाँ एक घंटे रही। एक घंटा श्रीमान। फिर वह बाहर आई, उन सज्जन के हाथ को चूमा "....

मैंने उसे रोक कर पूछा "वह कैसी दिखती थी", "फीकीदुबली ,, कुरूप। "

लम्बी"?"

हाँ", लम्बी । "

आँखें "?"

काली", बाल भी । वह बूढा बोलता "जा रहा था। मुझे सबकुछ समझ में आ गया था। उस भयंकर पत्र के सभी शब्द मेरी समझ में आ गए थेभावनाओं का घनघोर बवंडर मेरे अन्दर घुमड़ ! जिम्मेदारियाँ : रहा था। उस सेवक को वहीं खड़ा छोड़कर मैं नीचे की ओर दौड़ा। मैं सड़क पर दौड़ता हुआ अपने घर तक गया। दरवाज़े के सामने कुछ लोग एक ही स्थान पर खड़े थे। पुरुष और महिलायें। वे गुस्से में और धीरेधीरे -

बात कर रहे थे। मैंने उन्हें अशिष्टता से किनारे किया। फिर तीन मंज़िल ऊपर, थकान से सो सांस लिए बिना। मुझे उसके पास जाना था, उससे कहना थामुझे पता नहीं मैं उससे क्या कहता ...., पर मैं महसूस कर रहा था कि आई थी। मैंने सही समय पर मुझे सही शब्द मिल जायेंगे .....

सीढ़ियों पर भी मुझे लोग मिले। मैंने उन पर ध्यान नहीं दिया। ऊपर। मैंने दरवाज़ा खोला। मुझे फिनॉल की गंध आई। एक कठोर शब्द मेरे होठों पर विलीन हो गया। वहां कोई वह बिस्तर के (फिनायल) स्लेटी कपड़े पर खुली कमीज़ में पड़ी हुई थी। सिर पीछे की ओर, आँखें बंद। हाथ ढीले लटके हुए थे। मैं पास गया। उसे छूने का मुझे साहस नहीं हुआ। खुले हुए होंठ और झुकी हुई पलकें उसके पियक्कड़ होने का आभास दे रही थीं। मेरे रोंगटे खड़े हो गए। मैं कमरे में अकेला था। दूर होते हुए ठन्डे सूरज की रौशनी गन्दी मेज़ और बिस्तर के किनारे पर पड़ रही थीमैं उस महिला की ओर झुका। हाँ ..., वह मर चुकी थी। चेहरे का रंग नीला पड़ गया था। उसमें से एक अप्रिय गंध आ रही थी। और एक जुगुप्सा के भाव ने मुझे जकड़ लिया, एक घृणा ....

साभार: नूतन कहानियाँ

****